

1948 20वीं शताब्दी की शुरुआत के कारणों की निम्नलिखित रूप से व्याख्या करें।  
उत्तर) 20वीं शताब्दी के कारण निम्नलिखित हैं।

1) आर की निरंकुशता एवं अग्रगण्य शासन : → आर निरंकुशता द्वितीय कठोर एवं दमनात्मक नीति का संरक्षण था। वह राजा के देवी अधिकारों में विश्वास रखता था। उसे केवल अभिजात्य वर्ग और उच्च पदाधिकारियों का ही समर्थन प्राप्त था। इसकी पत्नी और प्रतिस्पर्धावादी औरत थी। इस समय राजपुत्री की इच्छा ही कानून थी। वह नियुक्तियों, पदोन्नतियों तथा शासन के अन्य कार्यों में हस्तक्षेप करता था। अतः गलत सलाहकार के कारण आर की स्वैच्छा-चारिता बढ़ती गई और जनता की स्थिति कामचला होती चली गई।

11) कृषकों की दासनीय स्थिति : → भव्य 1861 में कृषि दासत्व को समाप्त कर दिया गया था। परंतु किसानों की स्थिति में विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। अब की कुल जनसंख्या का एक तिहाई भाग भूमिहीन था जिन्हें जमींदारों की भूमि पर काम करना पड़ता था। इन कृषकों को कई तरह के करों का भुगतान करना पड़ता था। इनके पास पूँजी का अभाव था। ऐसी स्थिति में किसानों के पास श्रम ही अंतिम विकल्प था।

111) मजदूरों की दासनीय स्थिति : → अब की मजदूरों का काम एवं मजदूरी के आधार पर अनुचिततम शोषण किया जाता है था। मजदूरों को कोई राजनितिक अधिकार नहीं थे। वे अपनी माँगों के समर्थन में हड़ताल नहीं कर सकते थे। 20वीं शताब्दी पूँजीवादी व्यवस्था तथा आस्थादि निरंकुशता को समाप्त कर सर्वहारा वर्ग की स्थापना करना चाहते थे।

(iv) औद्योगिकीकरण की समस्या : → वरुन को राष्ट्रीय पूँजी का आभाव था अतः उद्योगों के विकास के लिए विदेशी पूँजी पर निर्भरता बढ़ती गई। विदेशी पूँजीपति अधिक शोषण को बढ़ावा दे रहे थे।



इस कारणा लोगों में आतंकित व्याप्त था।

- (v) फरनीसुरा की नीति: - इस में कई आसियां कई भाषाएं थी जहाँ रुलाव जाति प्रमुख थी। जार निकोलस द्वितीय ने एक जार एक धर्म का नारा दिया था तथा और रुली जनता को दमन किया। जनता में आतंकित होना और खी खो जार के विरुद्ध हो गया।

Ques: रुली क्रांति के प्रभाव की विवेचना करें।

उत्तर- इसी क्रांति का प्रभाव - इसी क्रांति के प्रभाव को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है।

(i) सोवियत संघ (ii) विश्व

(+) सोवियत संघ पर अक्टूबर क्रांति के निम्न प्रभाव पड़े

1.) स्वतंत्रतावादी शासन का उन्त → जारशाही एवं कुलीनों के स्वतंत्रतावादी शासन का अंत कर दिया गया। तत्पश्चात् एक नवीन संविधान का निर्माण किया गया जिसके अनुसार वहाँ जनता के शासन की स्थापना हुई।

(ii) अर्थतंत्र का शासन → नए संविधान द्वारा मजदूरों को वोट देने का अधिकार मिला देश की संपूर्ण संपत्ति राष्ट्रीय संपत्ति घोषित की गई उत्पादन व्यवस्था में निजी मुनाफे की भावना को निबाल दिया गया।

(iii) साम्यवादी शासन की स्थापना → अक्टूबर क्रांति द्वारा सोवियत संघ में साम्यवादी शासन की स्थापना हुई।

(iv) नवीन सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था का विकास - सोवियत संघ में समाज में व्याप्त और कुलमानेवाले समाज हो गई। समाज वर्गहीन हो गया।



रूसी क्रांति का विश्व पर प्रभाव → साम्यवाद क्रांति के विश्व पर पड़े प्रभाव को सकारात्मक एवं नाकारात्मक दो वर्गों में विभाजित किया जाता है।

① सकारात्मक प्रभाव → 1929-1930 की विश्वव्यापी मंदी के बाद सफलतापूर्वक सामना एवं द्वितीय विश्व-युद्ध से विश्व शक्ति के रूप में अपने को स्थापित करने से विश्व के अनेक देशों - चीन, विद्यमान भूगोलशास्त्र विद्या इत्यादि में साम्यवाद का प्रसार हुआ।

① राज्याभिषेकित अर्थव्यवस्था पंचवर्षीय योजना का विकास हुआ।

① सोवियत संघ में किसानों एवं मजदूरों की सत्ता स्थापित होने से सम्पूर्ण विश्व में किसान एवं मजदूरों के महत्व में वृद्धि हुई।

② नाकारात्मक प्रभाव

① सोवियत संघ एवं विश्व के कई देशों में साम्यवादी शासन स्थापित होने पर पूँजीवादी देशों का तीव्र विरोध हुआ।

① सम्पूर्ण विश्व में पूँजीपतियों एवं मजदूरों के मध्य संबंध बहुत होने लगा।

प्रश्न- लेनिन की नई आर्थिक नीति क्या थी ?

उत्तर- ~~सं~~ रूस में सत्ता परिवर्तन के बाद वहाँ की अर्थव्यवस्था कमजोर हो गई। अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से मार्च 1921 ई० में साम्यवादी दल के दसवें अधिवेशन में नयी आर्थिक नीति की घोषणा लेनिन ने की। इस नीति के द्वारा साम्यवादी सिद्धांत के साथ-ही-साथ पूँजीवादी विचारधारा को भी स्वीकार किया। इस नीति का उद्देश्य ग्रामों और कृषकों के आर्थिक सहयोग को सुदृढ़ बनाना, नगरों और गाँवों के समस्त प्रमज्जीवी वर्ग के देश की अर्थव्यवस्था का विकास



करने के लिए प्रोत्साहित करना तथा अर्थव्यवस्था को कार्य करने की अनुमति देना था।

नई आर्थिक नीति के निम्नलिखित लाभ हुए -

(i) कृषि का पुनरुद्धार - कृषकों के अनिश्चित उपज की अनिश्चित वसूली बंद कर दी गई एवं किसानों को अनिश्चित उत्पादन को बाजार में बेचने की अनुमति प्रदान की गई।

(ii) व्यापार - ~~दो~~ वीस मजदूरों वाले व्यापार को उन्नित कर लगा कर उसे व्यापार करने के लिए छुट्टा दिया गया।

(iii) उद्योग - मुद्रा सामग्री और उत्पादन के स्तर को उँचा करने के लिए आवश्यक था - औद्योगिकरण तेजी से किया जाए। इसलिए औद्योगिकीकरण को बढ़ाने के लिए विदेशी पूंजी को भी सीमित नॉए पर आमंत्रित की गई।

प्रश्न - प्रथम विश्व युद्ध में रुस की पराजय क्रांति हेतु मार्ग प्रशस्त किया कैसे ?

उत्तर - प्रथम विश्व युद्ध 1914 से 1918 तक चला। रुस इस युद्ध में मित्र राष्ट्रों की ओर से लड़ा। युद्ध में शामिल होने में ~~कम~~ एक मात्र उद्योग था कि रुसी जनता आंतरिक असंतोष को भूलकर लहरी मामलों में उलझी रहे। परन्तु युद्ध में रुसी सेना चारों तरफ हार रही थी। युद्ध के मध्य में जार ने सेना का कमान अपने हाथों में ले लिया। फलस्वरूप दरबार खाली हो गया। जार की अनुपस्थिति में जरीना और उसका तथाकथित गुरु रासपुरिन जैसे निकृष्टतम व्यक्ति को घड़मंते करने का मौका मिल गया जिसके कारण राजतंत्र की प्रतिष्ठा धुमिल हो गई।

प्रश्न - कार्ल मार्क्स के जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डालें।

उत्तर - कार्ल मार्क्स (1818-83) का जन्म जर्मनी के ट्रियर नगर में एक मधुरी परिवार में हुआ था। वह रुसो, मॉटेस्क्यू एवं हीगेल के विचारों से गहरे रूप से प्रभावित था। फ्रांसीस के रॉस के साथ मिलकर ~~उन्होंने~~ 1848 ई० में 'कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो' प्रकाशित किया। 1867 ई० में 'दास कैपिटल' का प्रकाशन किया। मार्क्स पूंजीवाद का विरोधी था। उसके क्रान्तिकारी विचारों के लिए उसे जर्मनी से निष्काशित कर दिया गया। उसने अपना शेष जीवन लंदन में व्यतीत किया।

मार्क्स ने समाजवाद की एक नई व्याख्या प्रस्तुत की जिसे वैज्ञानिक समाजवाद अथवा सांख्यवाद कहा जाता है। उसका मानना था कि मानव इतिहास 'वर्ग संघर्ष' का इतिहास है। मार्क्स द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त हैं - (i) इन्ध्यात्मक भौतिकवाद (ii) वर्ग संघर्ष, (iii) इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या (iv) मूल्य एवं अनिश्चित मूल्य तथा (v) राजपदीन एवं वर्गीय समाज की स्थापना का सिद्धान्त।